मुक्त हुए मुक्तक कृष्ण कन्हैया के

-रिश्ताई मुक्तक

डॉ. कृष्ण कन्हैया

मुक्त हुए मुक्तक कृष्ण कन्हैया के –रिश्ताई मुक्तक

डॉ कृष्ण कन्हैया

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: दिसम्बर, 2024

© डॉ कृष्ण कन्हैया

आशीर्वाद-वचन

डा. कृष्ण कन्हैया जी का ताज़ा मुक्तक संग्रह (रिश्तों पर आधारित) आपके हाथों में हैं। अपने व्यस्त जीवन में से कविता के लिए समय निकलना, अत्याधुनिक देश में अपनी परंपराओं और संस्कृति को सहेज कर रखना, और कविता में टूटते हुए रिश्तों को सहेजना कोई आसान काम नहीं है। उनके छठे काव्य संकलन पर मैं डा. कृष्ण कन्हैया जी को अनेक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। मुझे उम्मीद है जब आप इन्हें पढ़ेंगे तो आपको अपने रिश्तों की महक अवश्य महसूस होगी। प्रभु आपकी लेखन क्षमताओं में और वृद्धि करे ऐसी मेरी कामना है।

-डा. विष्णु सक्सेना

गीतकार (यश भारती)

ग़ज़िआबाद, भारत

मेरी कलम से

मैं स्वीकार करता हूँ कि-

मेरी पांचवीं पुस्तक 'मौन दीवारों का सच' पर आप सब के विचार और प्रशंसा से मैं फिर आह्लादित हुआ और इसी उत्साह ने मुझे यह आत्मविश्वास दिया कि मैं अपनी छठी कविता संग्रह और पहली मुक्तक संग्रह को मूर्त रूप दे सकूँ!

मैं पिछले दस सालों से फ़ेसबुक पर अपना एक मुक्तक लगातार हर रोज़ डालता रहा हूँ जो फ़ेसबुक के मित्रों द्वारा सराहा भी जाता रहा है! गीतांजलि बहुभाषी साहित्यिक समुदाय के संस्थापक और हमारे अभिभावक, डॉ कृष्ण कुमार और कुछ और अंतरंग साहित्यकार मित्रों(डॉ आनंद सिन्हा, डॉ प्रभात अखौरी, अंजनी अजनबी, परवेज़ मुज़फ़्फ़र, अरविंद रंजन दास, अजीत पांडे, हरनेक गिल और स्वर्गीय कुँवर बेचैन जी) ने मुझे कई बार प्रेरित किया कि मैं इन रचनाओं को किताब के रूप में छपवाऊँ। आपको जान कर यह हर्ष होगा कि मेरे मुक्तकों की संख्या ढाई हज़ार से भी कहीं ऊपर की हो गई है ! कुछ महीने पहले डॉ कृष्ण कुमार जी ने नीलाभ श्रीवास्तव जी का संपर्क नंबर मुझे दिया और तदुपरांत मुक्तक संग्रह छपाई की गाड़ी चल निकली!

मैंने अपने रचनाकार मित्रों और कई वरिष्ठ रचनाकारों से व्यक्तिगत रूप से आग्रह किया कि इस मुक्तक- संग्रह की भूमिका अपने आशीर्वाद-वचन के रूप में लिखे ! और मैं धन्य हुआ कि मेरे द्वारा संपर्क किए गए सारे लोगों ने अपने मित्र और छोटे भाई को इस मुक्तक संग्रह पर अपनी भूमिका लिख कर गौरवान्वित किया! आदरणीय सभी बड़े भाई श्रीमान विज्ञान व्रत जी, डॉ लक्ष्मी शंकर वाजपेयी जी, डॉ हरीश नवल जी, डॉ विष्णु

सक्सेना जी, श्रीमान तेजेंद्र शर्मा जी और छोटे भाई मनोज भावुक जी- मैं आप जैसे सब उच्च कोटि के रचनाकारों का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने मेरे मुक्तक संग्रह की गरिमा बढ़ाई है! मेरे बड़े भाई और अभिभावक डॉ कृष्ण कुमार के उल्लेख के बग़ैर मेरी अभिव्यक्ति अधूरी रह जाएगी जिनका वरदहस्त हमेशा की तरह इस बार भी मेरे सिर के ऊपर बना हुआ है - उनकी भूमिका आशीर्वाद-वचन के रूप में!

मैं अपनी पत्नी डॉ अंजना और दोनों बेटों अक्षत और डॉ उन्नत को भी धन्यवाद देता हूँ जिनके सकारात्मक सहयोग के बिना इस मुक्तक-संग्रह का पूरा होना संभव नहीं था।

मेरे हिन्दी के प्रति निरंतर लगाव ने ही यूके आने के बाद भी मुझे अपनी धरती और संस्कृति से जोड़े रखा है। इसे मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ और यह अनवरत लगाव मुझे ख़ुशी देती है कि हिन्दी के कार्यक्रमों में यथासंभव में शिरक़त करता रहूँ ताकि इस विचारधारा में असामयिक ज़ंग न लगे। और इसी उत्साह का एक अंग यह भी है कि मैं नियमित रूप से फेसबुक पर अपना एक मुक्तक लगभग हर रोज़ पेश करता हूँ जिसने मेरी इस पहली मुक्तक संग्रह की आधारशिला रखी है!

मैंने अपने इस मुक्तक संग्रह में हिंदी के साथ-साथ तत्सम, आंचलिक, देशज, उर्दू और अंग्रेज़ी शब्दों का भी उपयोग किया है जिस रूप में यह अमूमन बोली और दूसरों के सामने रखी जाती है! यही कारण है कि हिन्दी-उर्दू और देशज शब्दों का मिश्रण मेरी रचनाओं में ख़ुद-ब-ख़ुद होता चला जाता है।

मैं अपनी अगली पुस्तकों की तैयारी में लगा हूँ जो मुक्तकों के विभिन्न शीर्षकों पर क्रमशः संग्रह के रूप में प्रस्तुत होंगे ! इसके साथ-साथ एक व्यंग्य कविताओं का संग्रह भी प्रकाशनाधीन है।

मुझे उम्मीद है कि मेरे द्वारा लिखे मुक्तक आपको पसंद आयेंगे जो आगे भी मुझे साहित्य से जुड़े रहने में मेरे लिए मददगार सिद्ध होंगे।

डॉ कृष्ण कन्हैया

बर्मिंघम, इंग्लैंड, यू. के.

तिथि: 16.11. 2024

भूमिका

दुनिया का जो सबसे बड़ा धन है

अपनों का अपनों से अपनापन है

जो इस प्यार से रहा वंचित, वह

बदनसीब है सबसे बड़ा निर्धन है

यह मुक्तक बर्मिंघम (ब्रिटेन) में बसे सुपरिचित कवि डॉ कृष्ण कन्हैया के मुक्तक संग्रह से ली गई है! कवि ने ठीक ही कहा है कि रिश्तों के बिना भी क्या जीवन संभव है?! यदि संभव ही होता तो क्या वह सचमुच जीवन होता या जीवन काटने की विवशता ?

रिश्तों में बसे प्यार और प्यार से संचालित जीवन पर यह कोई अकेला मुक्तक नहीं है प्रस्तुत संग्रह के संभवतः नब्बे प्रतिशत मुक्तकों के केंद्र में रिश्ते ही हैं! रिश्तों के विविध रूप, विविध रंग, विविध खूबियाँ, रिश्तों का महत्व वर्तमान समय में टूटते-दरकते रिश्तों की पीड़ाएँ, रिश्तों को संजोने में उपस्थित चुनौतियाँ, बाधाएँ, रिश्तों को टूटने से बचाने के लिए आवश्यक मशविरे—रिश्तों का एक विराट संसार रचा है कवि ने: एक छोटी सी विधा मुक्तक में। रिश्ते बेशक संग्रह के केंद्र में हैं किन्तु जीवन और समाज के अन्य अनेक पहलुओं पर भी कवि की नज़र गई है। सबसे अधिक उल्लेखनीय बात तो यही है कि यह मुक्तकों का स्वतंत्र संग्रह है। हर वर्ष सैकड़ों कविता-संग्रह प्रकाशित होते हैं किन्तु मुक्तकों के स्वतंत्र संग्रह उँगलियों पर गिनाने लायक़ संख्या में होंगे।